होली-मिलन समारोह 2015

21 मार्च 2015 को उमनाथ वाली प्रेक्षागृह में सदैव की भांति मंच कार्यक्रम हमेश की भांति ठीक 6 बजे सायं मुख्य अतिथि व अध्यक्ष जी तथा कार्यकारिणी के सदस्यों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से प्रारम्भ हुआ। डा डी एस शुक्ल ने निम्न पंक्तियों द्वारा सभी का स्वागत किया-

सौंप रहा हूँ शब्द दो, अक्षत और गुलाल,
एक रचेगा का भाल आपका, एक रंगेंगा गाल।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री अनंत कमर जी मिश्र, अध्यक्ष न्याय-मूर्ति श्री डी के त्रिवेदी जी, सुश्री सरल अवस्थी, सर्वश्री महेश चंद्र द्विवेदी, डी एन दुबे, प्रसिद्ध उद्योग-पति विमल शुक्ल तथा भारी संख्या में अखिल-भारतीय श्री कन्याकुब्ज सभा के सदस्य गण मौजूद थे।

मुख्य- अतिथि का परिचय

हमारे आज के समारोह के मुख्य-अतिथि हैं श्री अनंत कुमार जी मिश्र। सितंबर 1941 को जन्मे श्री मिश्र जी ने एकोनामिक्स से एम॰ ए॰ करने के बाद 1966 में आई॰ आर॰एस॰ में चयनित होकर आयकर विभाग में दिपुटी कमिश्नर, एडिशनल कमिश्नर व कमिश्नर आयकर, वित्त मंत्रालय में डिप्टी सेक्रेटरी जैसे विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। मिश्र जी ने अपने 33 वर्ष illustrious सेवा काल में अमेरिका के कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी तथा टोकियो जापान आदि विख्यात संस्थाओं से प्रशिक्षण प्राप्त किया। इन्होंने 1991 में वैल्थ-टैक्स कंप्यूटेशन मैनुअल व 1993 में इन्सपेक्शन गाइड-लाइन मैनुअल की रचना और सम्पादन किया। श्री मिश्र जी ने 1999 में अपने पद से स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति लेकर इन्होंने सेंट्रल एडमिनिस्ट्रेटिव ट्रिब्यूनल के मेम्बर के रूप में लखनऊ में ज्वाइन किया। इस पद पर साढ़े चार वर्ष तक कार्य करने के बाद भारत सरकार के सचिव की श्रेणी से सितंबर 2003 में अंतिम रूप से अवकाश ग्रहण किया। श्री मिश्र जी अपने कार्यकाल के दौरान बहुत ही लोकप्रिय अधिकारी के रूप में जाने जाते थे और निष्ठा व ईमानदारी के लिए विख्यात रहे। इसी लिए आज वे हमारे बीच मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद हैं। हम सभी श्री मिश्र जी को एक बार फिर नमन करते हैं।

मुख्य-अतिथि द्वारा 'जड़ने और जोड़ने के उद्देश्य से' प्रकाशित पत्रिका 'कन्याकुब्ज-वाणी' के षष्ठम-अंक का वोमोचन होने के साथ ही पत्रिका सभागार में सभी को निःशुल्क वितरित की गई।

कविता कि तरह होली में भी नव-रसों का समावेश होता है। परंतु होली में भंग, रंग, और उमंग की अपनी अलग ही तरंग होती है। ऐसी ही तरंग वाले व्यक्तित्व को काव्य-पाठ हेतु आमंत्रित

किया गया जिसकी रचनाओं में इन तीनों रसोंका अद्भूत संगम तो है ही, पर यदि रंग में भंग हुई तो उनके पास दंड भी है। ऐसे श्री एम सी द्विवेदी जी जो, पुलिस के महानिदेशक रहने के साथ ही श्रंगार और व्यंग्य के अलावा भी अन्य साहित्यिक विधाओं के जाने माने साहित्यकार भी हैं, ने बहुत ही सुन्दर कवि-पाठ द्वारा सभी का दिल जीत लिया।

द्विवेदी जी की कविता पर उद्घोषक की टिप्पणी ने सभी को मुस्कुराने को मजबूर कर दिया-

"श्रंगार में अक्सर परकीया का ही ज़िक्र होता है पर कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनके बारे में कहा गया है-

कितना अजीब शख्स है, पत्नी पे फ़िदा है!
उसपे कमाल ये है कि अपनी पे फ़िदा है

ऐसा ही मेरे मित्र मेरे लिए कहते हैं

वैसे तो इस सभा के सभी सदस्य 'स्वयं-प्रदीप्त' हैं फिर भी हम कुछ अनमोल मनकों को चुन कर उन्हें 'कान्यकुब्ज-रत्न' सम्मान से सम्मानित करते हैं। यह लोग सम्मान गृहण करके हमारा ही सम्मान बढ़ाते हैं।

'कान्यकुब्ज-रत्न' सम्मान"

इस मंच से निरंतर प्रयास रहा है कि नारी शक्ति का सम्मान करें और उन्हें अपने समारोह में अधिक से अधिक भागीदारी के लिए प्रोत्साहित करें। इसी प्रयास के चलते हमने 'कान्यकुब्ज रत्न' सम्मान के साथ ही एक 'कन्याकुब्ज विदुषी' सम्मान देने का भी प्रावधान किया। 'कान्यकुज-विदुषी' उन महिलाओं को दिया जाता है जो शिक्षा या किसी अन्य जेटर में ख्याति पाई हो। हमारा सौभाग्य है कि डा॰ आशा मिश्रा और न्यायमूर्ति श्रीमती शोभा दीक्षित जी ऐसी विश्रुत विभूतियों ने हमारे होली मिलन समारोह में मुख्य अतिथि बनना स्वीकार किया तथा कुछ अन्य महिलाओं ने 'कान्यकुज-रत्न' का अलंकरण स्वीकार कर हमें गौरवान्वित किया।

अपनी इसी परंपरा के तहत इस वर्ष के प्रथम 'कान्यकुब्ज रत्न सम्मान' के लिए हिन्दी साहित्य से जुड़ी सुश्री सरल अवस्थी जी को प्रदान किया गया-

सुश्री सरल अवस्थी जी

सरल जी हिन्दी साहित्य से एम॰ए॰ व पी॰एच॰डी॰ हैं और वर्तमान में श्री जय नारायण स्नाकतोत्तर महाविद्यालय लखनऊ में एसोसिएट प्रोफेसर के पद को सुशोभित कर रहीं हैं। यह सुप्रसिद्ध शिक्षक होने के साथ ही हिन्दी साहित्य में भी एक कीर्तिमान हैं। आप स्वदेश और विदेश में तीस से अधिक संगोष्ठियाँ में भाग ले चुकी हैं और बीसाधिक शोध-पत्र प्रस्तुत कर चुकी हैं। इनकी उपलब्धियां अनेक हैं पर समय बद्धता की सीमा का आदर करते हुए मैं संक्षिप्त में उल्लेख करूंगा- इनके 100 से अधिक आलेख और कवितायें ख्याति प्राप्त पत्रिकाओं में में प्रकाशित हो चुकी हैं और यह स्वयं भी दशाधिक पत्रिकाओं का

सम्पादन कर चुकी हैं। सरल जी शिक्षा-प्रसार जो कि इनका मुख्य ध्येय है, के अलावा महिला अत्याचार के विरुद्ध नुक्कड़ नाटक, युवाओं के एकीकरण व प्रबंधन, प्रशिक्षण, वृक्षारोपण, व वरिष्ठ-नागरिकों के सहायतार्थ शिविर के आयोजन में काफी सक्रिय हैं। ऐसी बहुमुखी प्रतिभा वाली सरल अवस्थी जी का हम नमन करते हैं और उन्हें सम्मान गृहण करने के लिए मंच पर आमंत्रित करते हैं।

श्री देवेन्द्र नाथ दुबे

कान्यकुब्ज-रत्न से सम्मानित होने वाले दूसरे व्यक्ति थे- श्री देवेन्द्र नाथ दुबे, जो डी एन दुबे के नाम से अधिक जाने जाते हैं। श्री दुबे जी का जन्म कान्यकुब्जों के हार्ट-लैंड कन्नौज में हुआ था। इस प्रकार यह विशुद्ध 'कनवजिया' हैं। यह जहाँ रहे हमेशा अव्वल रहे। हाई-स्कूल और इंटर में यह ज़िले में प्रथम और एम॰ए॰ में इन्हें आगरा विश्वविद्यालय का गोल्ड मेडल मिला। इसी परंपरा में यह पी॰सी॰एस॰ के भी टापर रहे। कन्नौज जो अभी तक मात्र एक कस्बा था, के दुबे जी पहले हैं जो कन्नौज में जन्में, पले , बढ़े, और पढे पहले व्यक्ति है जो आई॰ए॰एस॰ हुए। प्रशासनिक सेवा इनके प्रमुख ध्येय रहा है जिसकी वजह से इन्होंने इंजीनियरिंग, सेना व आर्थिक दृष्टि से अति लुभावनी जीवन-बीमा में चयनित होने के बाद भी ज्वाइन नहीं किया। प्रशासनिक सेवा में इन्होंने अति महत्वपूर्ण जगहों पर कार्य किया और कीर्तिमान स्थापित किए; इनमे से विशेष सचिव मुख्य-मंत्री, डी॰एम॰ राय-बरेली और कमिश्नर इलाहाबाद डिवीज़न में यह बहुत जनप्रिय रहे। जो भी इनके पास आया उसका इन्होंने तत्काल काम कर दिया। यहाँ यह स्मरण करना अनिवार्य कि है कि आजकल जो व्यक्ति सही वही पीड़ित होता है और उच्च अधिकारी के पास जाने का प्रयास भी करता है, सर्वविदित है कि क्योंकि गलत काम निचले स्तर से स्वमेव सिद्ध होते रहते हैं। सहयोग जिनके लिए हम आभारी हैं।

'रत्न-सम्मान' के बाद सभा केआर महासचिव श्री उपेंद्र मिश्र ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत कि तथा छात्राओं को छत्र-वृत्ति व स्कूल आने और जाने हेतु साइकिलों मुख्य-अतिथि द्वारा प्रदान कराया।

इस वर्ष छात्राओं को लगभग 30000=00 रु॰ की छात्र-वृत्ति 5 साइकलें प्रदान मंच पर प्रदान की गईं। लगभग इतनी ही राशि की छत्रवृत्ति छात्राओं को उनके स्कूल ही भेजी गईं क्योंकि उन बालिकाओं को लखनऊ आने में असुविधा थी। फिर भी एक छात्रा ज़िला सीतापुर से व एक उन्नाव के ग्रामीण अंचल से अपने अभिभावकों के साथ समारोह में सम्मिलित हुईं और पारितोषिक प्राप्त किया।

पुरुस्क्रत छात्राओं की मुस्कुराहट को पूरे सभागृह में फैलाने के लिए एसएचआर विनय बाजपेयी जी ने बहुत ही सुंदर कवितायें सुनाईं, जिनमें कुछ श्रीनगर की व कुछ देशप्रेम से ओत-प्रोत थीं।

मुख्य अतिथि महोदय ने सभी को साधुवाद कहा और इससे आगे जुडने की भी इच्छा जताई। अध्यक्ष जी ने मुख्य-अतिथि को दुशाला व स्मृति-चिह्न दे कर उन्हें सम्मानित किया।

अध्यक्ष जी के धन्यवाद ज्ञापन के बाद राष्ट्र-गान द्वारा समारोह का समापन किया गया।

विशेष- कार्यक्रम के लिए हाल तीन महीने पहले बुक कराया जाता है। इस वर्ष इस बात का तो ध्यान रखा गया था कि हमारा कार्यक्रम 'वर्ड-कप' के किसी महत्वपूर्ण मैच के दिन न पड़े। परंतु दिन तय करते समय 'पंचांग' उपलब्ध न होने के कारण कार्यक्रम नवरात्रि की प्रतिपदा के दिन पड़ गया। परंतु हमारी महिला प्रकोष्ठ की मंत्री कु॰ प्रेमप्राकाशिनी जी ने बहुत कम समय में ही जलपान में फलाहार का बहुत ही सुंदर प्रबंध कर दिया जिससे कि सदस्यों ने काफी सराहा। प्रेमप्रकाशिनी जी इसके लिए विशेष धन्यवाद की पात्र हैं।

परंतु जो सदस्य 'निर्जल' व्रत थे उनकी असुविधा का हमें खेद है। भविष्य में इसका भी ध्यान रखा जायेगा।